ज्योतिष पृथ्वी तक सीमित नहीं

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

अंततः, मेरे लिए ज्योतिष वह सेतु है जो विज्ञान और अध्यात्म, भविष्य और वर्तमान, तथा व्यक्ति और ब्रह्माण्ड को जोड़ता है. यह मुझे यह सिखाता है कि ईश्वर कोई दूर की सत्ता नहीं, बल्कि वही चेतना है जो हर ग्रह, हर नक्षत्र, हर क्षण, और हर प्राणी में प्रवाहित है. जब हम अपने जीवन को उस ब्रह्माण्डीय लय के साथ जोड़ लेते हैं, तब हम न केवल अपने भाग्य को समझते हैं, बल्कि उसे साकार करने की क्षमता भी प्राप्त करते हैं.

ज्योतिष मेरे जीवन का एक गहरा अनुभव है — यह मेरे लिए केवल एक विषय या अध्ययन का क्षेत्र नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अनुभूति, दार्शनिक चिंतन और वैज्ञानिक विवेचना का अद्भुत संगम है. जब मैं ज्योतिष शब्द उच्चारित करता हूँ, तो मुझे केवल ग्रहों की गणना, नक्षत्रों की स्थिति या जन्मकुंडली के भाव दिखाई नहीं देते; मुझे दिखता है वह ब्रह्माण्ड, जो अपनी असीम लय और अनुशासन में गतिशील है. ज्योतिष वही विज्ञान है जो इस ब्रह्माण्ड की गति और जीवन की गति के बीच छिपे सामंजस्य को प्रकट करता है. जब से मानव ने आकाश की ओर देखना प्रारंभ किया, तब से ज्योतिष की यात्रा आरम्भ हुई. तारों का झिलमिलाना, सूर्य का उदय-अस्त, चन्द्रमा का बढ़ना-घटना — इन सबने मनुष्य को यह सोचने पर विवश किया कि जीवन का संबंध केवल पृथ्वी तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका ताना-बाना उस अनंत आकाश से जुड़ा है जहाँ से सब कुछ संचालित होता है. यही विचार धीरे-धीरे ज्योतिष बन गया — एक ऐसा शास्त्र जो समय, स्थान और गति को जोड़कर जीवन की दिशा बताता है.

मेरे विचार से ज्योतिष का मूल उद्देश्य भविष्य बताना नहीं है. इसका वास्तविक उद्देश्य यह है कि व्यक्ति अपने कर्म, अपने स्वभाव, और अपने निर्णयों को समझ सके. जब हम यह जान लेते हैं कि हमारे जीवन में कौन-सी शक्तियाँ कार्य कर रही हैं - कौन-सा ग्रह हमारी बुद्धि को प्रभावित करता है, कौन-सा हमारी भावनाओं को, कौन-सा हमारी ऊर्जा को - तब हम स्वयं के भीतर के सामर्थ्य को पहचान पाते हैं. इस दृष्टि से ज्योतिष हमें बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक ब्रह्माण्ड की ओर ले जाता है. यह हमें यह सिखाता है कि जो आकाश में घट रहा है, वही हमारे भीतर भी घट रहा है; जो तारों की गति है, वही हमारे विचारों की गति है.

वेदों में कहा गया है — यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे. इसका अर्थ है कि जिस प्रकार ब्रह्माण्ड में गति और संतुलन है, वही गति और संतुलन मनुष्य के शरीर और मन में भी विद्यमान है. जब हम अपने ग्रहों को समझते हैं, तो हम अपने भीतर के तत्वों — पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश — को भी समझते हैं. यही पंचमहाभूत मनुष्य और सृष्टि दोनों के आधार हैं. ज्योतिष इन्हीं तत्वों का अध्ययन कर यह दिखाता है कि मनुष्य का जीवन किस प्रकार प्रकृति की लय से जुड़ा हुआ है. मेरे अनुभव में, ज्योतिष केवल धर्म या परंपरा का विषय नहीं है. यह एक सार्थक विज्ञान है — जो गणित, भूगोल, दर्शन और मनोविज्ञान — सभी को एक सूत्र में बाँधता है. ग्रहों की गति गणितीय है, उनकी स्थिति भूगोलिक है, उनका अर्थ दार्शनिक है, और उनका प्रभाव मनोवैज्ञानिक है. इसीलिए मैं कहता हूँ कि ज्योतिष विज्ञान की आत्मा है, क्योंकि यह हमें यह सिखाता है कि विज्ञान और चेतना दोनों एक-दूसरे से अलग नहीं हैं.

भारतीय संस्कृति में ज्योतिष को अत्यंत सम्मानित स्थान मिला है. हमारे सभी संस्कार, पर्व और निर्णय ज्योतिष के अनुसार ही निर्धारित होते हैं. चाहे वह गर्भाधान संस्कार हो या विवाह का मुहूर्त, गृहप्रवेश हो या यात्रा का शुभ समय- सब कुछ पंचांग और ग्रहों की स्थिति देखकर तय किया जाता है. यह परंपरा केवल विश्वास पर नहीं, बल्कि ऊर्जा और समय के वैज्ञानिक संतुलन पर आधारित है. ऋषियों ने यह अनुभव किया था कि जब प्रकृति की ऊर्जा अनुकूल होती है, तब मनुष्य के कर्म अधिक फलदायी होते हैं. इसलिए उन्होंने समय का अध्ययन कर शुभ-अशुभ का विचार प्रस्तुत किया. यही मूहूर्त विज्ञान का मूल है.

ज्योतिष हमें यह भी सिखाता है कि जीवन की हर घटना एक निश्चित समय पर घटती है, और प्रत्येक समय अपनी विशिष्ट ऊर्जा लेकर आता है. जब हम उस ऊर्जा के साथ तालमेल बनाते हैं, तब जीवन सरल और सफल होता है. यदि हम उसके विपरीत चलते हैं, तो संघर्ष बढ़ता है. अतः ज्योतिष हमें सही समय पर सही निर्णय लेना सिखाता है. यही कारण है कि इसे कालविद्या कहा गया है.

आधुनिक समय में विज्ञान और तकनीक ने मनुष्य को बहुत कुछ दिया है, परंतु आंतरिक शांति छीन ली है. मनुष्य ने ब्रह्माण्ड को नापा है, पर स्वयं को नहीं पहचाना. वह ग्रहों की दूरी तो माप सकता है, पर अपने विचारों की गहराई नहीं जानता. इसी रिक्ति को भरने का कार्य ज्योतिष करता है. यह हमें बताता है कि बाहरी ब्रह्माण्ड और आंतरिक ब्रह्माण्ड एक ही हैं — और जब दोनों में तालमेल बनता है, तभी सच्चा संतुलन प्राप्त होता है.

मेरे अनुसार, ज्योतिष आत्मा के विकास का शास्त्र है. यह केवल भविष्यवाणी नहीं करता, बल्कि यह दिखाता है कि जीवन में कौन-सी परिस्थितियाँ हमें आध्यात्मिक रूप से विकसित करने आई हैं. जब कोई ग्रह नीच स्थिति में होता है, तो वह हमें आत्म-संघर्ष के माध्यम से शक्ति सिखाता है; जब कोई ग्रह उच्च होता है, तो वह हमें आत्म-विश्वास और सफलता देता है. इस प्रकार हर ग्रह एक शिक्षक है — कोई हमें संयम सिखाता है, कोई धैर्य, कोई प्रेम, कोई न्याय, कोई ज्ञान. ज्योतिष का गूढ़ रहस्य यही है कि यह जीवन को शिक्षा के रूप में देखता है. यह भी सत्य है कि हर व्यक्ति अपनी जन्मकुंडली के अनुसार अद्वितीय होता है. दो मनुष्यों के ग्रह समान नहीं होते, इसलिए उनके जीवन के अनुभव भी समान नहीं हो सकते. यही विविधता सृष्टि की सुंदरता है. जब हम अपनी कुंडली को समझते हैं, तो हम अपने स्वभाव को स्वीकार करना सीखते हैं. यह स्वीकृति हमें आत्मविश्वास देती है. हम दूसरों से तुलना करना छोड़ देते हैं, क्योंकि हम जान लेते हैं कि हर जीवन की यात्रा अलग है.

ज्योतिष का एक सामाजिक पक्ष भी है. यह केवल व्यक्तिगत जीवन को नहीं, बल्कि समाज के सामूहिक जीवन को भी दिशा देता है. जब राजा, मंत्री, सैनिक, व्यापारी, किसान, सभी अपने निर्णय समय और ग्रहों की स्थिति देखकर लेते थे, तब समाज में समरसता और संतुलन था. आज भी, यदि शासन, शिक्षा, स्वास्थ्य और नीति-निर्माण में समय के सिद्धान्तों का ध्यान रखा जाए, तो निर्णयों की गुणवत्ता और परिणामों की स्थिरता बढ़ सकती है.

करें ये पांच सरल उपाय, दूर होंगी हर परेशानियां

अगर आप धन की कमी, खराब सेहत, विवादों या कारोबार में धोखाधड़ी जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं, तो ज्योतिष शास्त्र में बताए गए कुछ आसान मंत्र और उपाय आपकी किस्मत को बदल सकते हैं. ये उपाय आपके जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार कर सकते हैं और हर क्षेत्र में सफलता दिला सकते हैं.

धन लाभ के लिए उपाय- धन की कमी को दूर करने और आर्थिक स्थिरता पाने के लिए राहु देव की उपासना अत्यंत प्रभावी मानी गई है.रोज़ शाम को रां राहवे नम: मंत्र का जप करें.स्टील का छल्ला धारण करें, जिससे राहु ग्रह का प्रभाव संतुलित होता है. हर शाम किसी कुत्ते को रोटी या बिस्किट खिलाएं.इन उपायों से जीवन में धन का आगमन होता है.

अच्छे स्वास्थ्य के लिए मंत्र- स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है. अच्छे स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए सूर्यदेव की पूजा और शिव का ध्यान सर्वोत्तम उपाय है.रोज़ सुबह सूर्य को अर्घ्य दें और जल अर्पण करें. नम: शिवाय मंत्र का जप करें.भोजन के समय स्वच्छता और सात्त्विक आहार पर विशेष ध्यान दें.यह उपाय न केवल शारीरिक बल बढ़ाते हैं बल्कि मानसिक शांति भी प्रदान करते हैं.

मुकदमेबाजी और विवादों से मुक्ति के लिए मंत्र जो लोग कोर्ट-कचहरी के चक्कर में हैं या घर-परिवार में झगड़ों से परेशान हैं, उनके लिए भैरव पूजा चमत्कारी सिद्ध होती है. हर रविवार श्री भैरव मंदिर जाएं और नारियल या सफेद मिठाई अर्पित करें.शाम के समय भं भैरवाय अनिन्धनिवारणाय स्वाहा मंत्र का जप करें. .

कारोबार में धोखे से बचाव के उपाय- व्यवसाय में सफलता पाने के लिए केवल मेहनत नहीं, बल्कि सकारात्मक ऊर्जा और सतर्कता भी जरूरी है. किसी भी साझेदारी में सावधानी बरतें.रोज़ सुबह सूर्यदेव को जल चढ़ाकर गायत्री मंत्र भूर्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यम्ज का जप करें.

बच्चों के बौद्धिक विकास के लिए मंत्र- माता-पिता अपने बच्चों की बुद्धिमत्ता और एकाग्रता बढ़ाने के लिए भगवान गणपति की आराधना कर सकते हैं .बुधवार सुबह गणपति जी की पूजा करें .पाँच मोदक, पाँच लाल गुलाब और पाँच दूर्वा पत्र अर्पित करें .गाय के घी का दीपक जलाएं और बुद्धिप्रदाय नम : मंत्र का 108 बार जप

उत्पन्ना एकादशी में तुलसी पूजा से प्रसन्न होंगी लक्ष्मी माता

उत्पन्ना एकादशी का व्रत हिंदू धर्म में अत्यंत पवित्र और फलदायी माना जाता है. यह व्रत हर साल मार्गशीर्ष माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि को मनाया जाता है और इस वर्ष यह 15 नवंबर 2025, शनिवार के दिन पड़ रही है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इस दिन भगवान विष्णु की प्रिय एकादशी देवी का प्राकट्य हुआ था, इसलिए इसे उत्पन्ना एकादशी कहा जाता है. शास्त्रों में वर्णन है कि इस व्रत को करने से सभी पापों का नाश होता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है.

इस दिन भगवान विष्णु के साथ-साथ तुलसी माता की पूजा का विशेष महत्व बताया गया है, क्योंकि तुलसी को माता लक्ष्मी का ही स्वरूप माना गया है. कहा जाता है कि जो व्यक्ति इस दिन तुलसी माता की विधिपूर्वक पूजा करता है, उसके घर में कभी दरिद्रता नहीं आती और मां लक्ष्मी स्थायी रूप से वास करती हैं. इस दिन प्रातःकाल स्नान करके शुद्ध वस्त्र धारण करने चाहिए और घर के आंगन या मंदिर में तुलसी के पौधे को गंगाजल से स्नान कराकर लाल चुनरी, पुष्प, कुमकुम और सोलह श्रृंगार की वस्तुएं अर्पित करनी चाहिए. इसके बाद घी का दीपक जलाकर 'ऊं नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप करें.

ऐसा करने से भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी दोनों की कृपा प्राप्त होती है. अगर घर में धन की कमी बनी रहती है या बार-बार आर्थिक संकट का सामना करना पड़ता है, तो उत्पन्ना एकादशी के दिन तुलसी की मंजरी को लाल कपड़े में बांधकर तिजोरी या धन रखने की जगह पर रखने का विशेष विधान बताया गया है. यह उपाय धन वृद्धि और स्थायी समृद्धि लाने वाला माना गया है.

इस दिन पूरे दिन सात्विक रहना, व्रत रखना, जरूरतमंदों को दान देना और भगवान विष्णु की कथा या तुलसी चालीसा का पाठ करना अत्यंत पुण्यकारी माना गया है. उत्पन्ना एकादशी का व्रत केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि और मानसिक शांति का प्रतीक भी है. जो व्यक्ति श्रद्धा और सच्चे मन से इस व्रत को करता है, उसे भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी दोनों का आशीर्वाद मिलता है.

इसके अलावा, तुलसी माता को कच्चा दूध अर्पित करना और सात बार उनकी परिक्रमा करना भी अत्यंत शुभ फलदायी होता है. परिक्रमा करते समय 'जय मां लक्ष्मी' और 'जय श्री हरि' का जाप करने से जीवन की सभी बाधाएं समाप्त होती हैं और घर में सुख-शांति का वास होता है.

शनिदेव की कृपा पाने करें 5 आसान उपाय

शनिदेव को प्रसन्न करने और उनके अशुभ प्रभावों को दूर करने के लिए शास्त्रों में अनेक उपाय बताए गए हैं . यदि कोई व्यक्ति श्रद्धा और नियम से इन उपायों को अपनाता है, तो शनिदेव की कृपा उस पर अवश्य होती है .

पहला उपाय यह है कि शनिवार के दिन काली गाय का पूजन करें और उसे काले चने व गुड़ खिलाएं . यह उपाय अशुभ शनि प्रभाव को शांत कर जीवन में स्थिरता लाता है .

दूसरा उपाय है अपने अधीनस्थ कर्मचारियों और जरूरतमंदों के प्रति सद्व्यवहार करना, क्योंकि शनिदेव न्याय के देवता हैं और वे हमेशा सत्य, मेहनत और ईमानदारी का साथ देते हैं .

तीसरा उपाय है शनिवार को सुंदरकांड का पाठ और हनुमानजी की पूजा करना. कहा जाता है कि हनुमानजी के पूजन से शनि दोष स्वत: शांत हो जाता है .

चौथा उपाय है शनिवार को शनि मंदिर जाकर सरसों का तेल चढ़ाना, जिससे जीवन की रुकावटें दूर होती हैं और आर्थिक स्थिति में सुधार आता है .

पाँचवाँ उपाय यह है कि एक कटोरे में सरसों का तेल लेकर उसमें अपना चेहरा देखें और फिर उस तेल को कांच की शीशी में डालकर किसी निर्जन स्थान पर दो हाथ गहरा गड्ढा खोदकर गाड़ दें . यह क्रिया नकारात्मक ऊर्जा और शनि दोष को दूर करने में सहायक मानी जाती है . इन छोटे-छोटे लेकिन प्रभावी उपायों को नियमित रूप से करने से शनि के दोष दूर होकर शुभ परिणाम मिलते हैं . व्यक्ति के जीवन में सुख, समृद्धि और आत्मविश्वास का संचार होता है . शनिदेव उन लोगों पर विशेष कृपा करते हैं जो अपने कर्मों में सच्चाई, संयम और न्याय का पालन करते हैं .

घर की दिशाओं का सही उपयोग बदल सकता है आपकी किस्मत

सही दिशा में सही चीज़ें रखने से घर में सुख-समृद्धि, धन और स्वास्थ्य का वास होता है. पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण सहित सभी दिशाओं का सीधा संबंध जीवन की ऊर्जा से होता है. वास्तु के इन सिद्धांतों को समझकर अगर घर में बदलाव किए जाएं, तो घर में सौभाग्य और सकारात्मकता दोनों बढ़ते हैं.

वास्तु शास्त्र के अनुसार, घर की हर दिशा का अपना महत्व होता है. अगर किसी दिशा में गलत वस्तु रख दी जाए या निर्माण नियमों के विपरीत हो जाए, तो घर में अशांति और नकारात्मक ऊर्जा फैल जाती है. वहीं, सही दिशा में सही चीज़ें रखने से घर में सुख-समृद्धि, धन और स्वास्थ्य का वास होता है. पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण सहित सभी दिशाओं का सीधा संबंध जीवन की ऊर्जा से होता है. वास्तु के इन सिद्धांतों को समझकर अगर घर में बदलाव किए जाएं, तो घर में सौभाग्य और सकारात्मकता दोनों बढ़ते हैं.

पूर्व दिशा सूर्य की ऊर्जा का प्रवेश द्वार

पूर्व दिशा सूर्य उदय की दिशा मानी जाती है. इस दिशा से घर में सकारात्मक किरणें और ऊर्जा प्रवेश करती हैं. घर का मुख्य द्वार यदि इस दिशा में हो, तो यह अत्यंत शुभ होता है. इस दिशा में खिड़कियाँ रखना भी लाभदायक होता है.

पश्चिम दिशा रसोईघर या टॉयलेट के लिए उपयुक्त

पश्चिम दिशा में रसोईघर या टॉयलेट होना शुभ माना गया है. लेकिन दोनों को एक-दूसरे के पास नहीं रखना चाहिए. इस दिशा में भारी सामान भी रखा जा सकता है.

उत्तर दिशा खुलापन और ताजगी की दिशा

उत्तर दिशा में घर की सबसे ज़्यादा खिड़कियाँ और दरवाज़े होना चाहिए. घर की बालकनी और वॉशबेसिन इसी दिशा में हों तो उत्तम है. यदि घर का मुख्य द्वार इस दिशा में है, तो अति उत्तम माना जाता है.

दक्षिण दिशा स्थिरता लेकिन सावधानी जरूरी

इस दिशा में शौचालय, खिड़की या खुलापन नहीं होना चाहिए. यहाँ भारी सामान रखना शुभ होता है.इस दिशा में दरवाज़े हों तो नकारात्मक ऊर्जा और कलह बढ़ सकती है.

उत्तर-पूर्व दिशा (ईशान कोण) पूजा और जल तत्व की दिशा इसे ईशान दिशा कहा जाता है और यह जल तत्व से जुड़ी है. इस दिशा में पूजाघर, बोरिंग, स्विमिंग पूल होना शुभ है. इस दिशा में घर का मुख्य द्वार अच्छा माना जाता है.

उत्तर-पश्चिम दिशा वायु तत्व की दिशा- इसे वायव्य दिशा कहते हैं. इस दिशा में बेडरूम, गैराज या गौशाला रखना वास्तु के अनुसार ठीक होता है.

दक्षिण-पूर्व दिशा अग्नि तत्व की दिशा- इसे आग्नेय कोण कहा जाता है. यह गैस, बॉयलर और ट्रांसफॉर्मर जैसे उपकरणों के लिए शुभ स्थान है. इस दिशा में रसोईघर बनाना लाभदायक माना गया है.

दक्षिण-पश्चिम दिशा स्थायित्व और धन की दिशा- इसे नैऋत्य दिशा कहा जाता है. यहाँ घर के मुखिया का कमरा या कैश काउंटर बनाया जा सकता है. इस दिशा में खुलापन नहीं होना चाहिए.

घर का आंगन सकारात्मक ऊर्जा का केंद्र - अगर घर में आंगन नहीं है, तो घर अधूरा माना जाता है. घर के आगे या पीछे छोटा आंगन अवश्य होना चाहिए. तुलसी, नीम, आंवला, अनार या अमरूद जैसे पौधे लगाना शुभ होता है.

राशिफल

दिनांक- 09 से 15 नवम्बर 2025 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर मो.नं. 098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य तुला राशि में, मंगल वृश्चिक राशि में, बुध वृश्चिक राशि में, ता. 10 को 9 .31 दिन से वक्री, गुरू कर्क राशि में, ता. 12 को 7 .8 दिन से वक्री, शुक्र तुला राशि में, वक्री शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा मिथुन कर्क सिंह और कन्या राशि में संचरण करेगा .

ग्रहयोगों का प्रभाव :- ता. 10 को वक्री बुध के प्रभाव से सूत, सन, गुड़, खाड़, नमक, रूई, सोना, चांदी, अनाज में मंदी का झटका आकर कुछ तेजी बनेगी . समुद्री तट प्रदेशों में बादल चाल, कहीं कहीं छुटपुट बूंदाबांदी का योग है .

पर्व-व्रत-त्यौहार :

बुधवार 12 नवम्बर को श्रीकाल भैरवाष्टमी,
शनिवार 15 नवम्बर को उत्पन्ना एकादशी व्रत

मेष

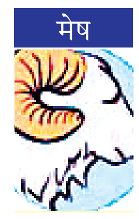

इस सप्ताह आप कार्य में बदलाव करने या साथ में कोई नया कार्य शुरू करने का विचार कर सके है. कामकाज की अधिकता रहेगी. आप जीवन के नये आयाम छुयेंगे. अपनी लगन एवं बल पर आप अपनी स्थिति में सुधार करने में सफल होंगे. कार्य क्षेत्र में आप क्रियाशील रहेंगे, आप किसी नये अनुबंध में शामिल होने का मन बना सकते है. अचानक लाभ का योग है.

वृषभ

इस सप्ताह कार्य क्षेत्र में वरिष्ठजनों का प्रभाव बढ़ेगा. मनोंवाछित कार्य होंगे. आपसी समझ बढ़ जाने से रिश्तों में मजबूती आयेगी. शिक्षा के क्षेत्र में संतान की उन्नति होगी. नये व्यवसायिक अनंबंधों का योग है. जीवनसाथी की प्रसन्नता रहेगी.खुले मन एवं मस्तिष्क से समस्याओं का हल निकालें, जहां तक बने अधिक दूरी की यात्रा न करें. प्रापर्टी के कार्यो में खर्च होगा. लापरवाही से बचें.

मिथुन

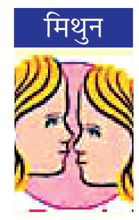

इस सप्ताह आपके अधिकारी व शुभ चिन्तक धन कमाने में आपकी सहायता करेंगे. व्यापार से जुड़े लोग बेहतर प्रदर्शन कर सकते है. प्रतिस्पर्धा में मनोकामना पूर्ण होगी. जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखकर कार्य करें. भाईयों के बीच जमकर जायजाद का बंटवारा हो सकता है. पुराने अटके कार्य पूर्ण होंगे. नये संपर्को का मेलजोल होगा. भावनात्मक संबंधों में मजबूती आयेगी.

कर्क

इस सप्ताह कार्यक्षेत्र में जटिल समस्याओं से आप राहत महसूस करेंगे, आपके व्यवहार से कोई बड़ा धार्मिक या महत्वपूर्ण कार्य बन सकता है, मनोवांछित कार्य बनेगा, धन संपत्ति के मामलों में कोई विवाद सामने आयेगा, जो किसी मध्यस्थ से सुलझ जायेगा. सप्ताह का उत्तरार्ध ज्यादा लाभकारी रहेगा. असहाय लोगों की मदद आपको खुशी देगी.

सिंह

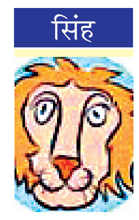

इस सप्ताह मनोवांछित सफ्लता के योग हैं. भौतिक सुख साधनों की पूर्ति होगी. पूर्वाधं में कार्यो की सफ्लता थोड़ी वाधित हो सकती है, धैर्य और समझदारी से काम लेकर उलझे मामले को टालना बेहतर होगा. सप्ताह के उत्तरार्ध में सभी पुरानी समस्याओं का समाधान होगा. अचानक सहयोग प्राप्त होगा. शारीरिक स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा. धार्मिक कार्य बनने का योग है.

कन्या

इस सप्ताह आपकी सूझबूझ की कमी के कारण पहले से चल रहे कार्यो में बाधा आ सकती है, आप घर परिवार के लिये ज्यादा समय निकाल सकते हैं. दूसरों की गलती न निकालें. सामाजिक सम्मान प्राप्त होगा. सप्ताह के उत्तरार्ध में मांगलिक कार्य बनने का योग है. रोगी के कार्य में अचानक खर्च बढ़ सकता है, दूर दराज की यात्रा में सतर्कता बांछनीय.

तुला

इस सप्ताह आपको सफ्लता के योग है. अचानक लाभ के अवसर मिलेंगें. शुभ समाचार आपको खुशियों से भर देगा. अविवाहित, विवाह बंधन में बंध सकते है. पारिवारिक योजना में शामिल होंगे. दोस्तों के साथ प्रसन्नता मिलेगी. व्यवस्थाओं में व्यस्त रहेंगे. कुछ विरोधी वर्ग आपकी ओर मदद का हाथ बढ़ा सकते हैं. राजकीय सम्मान प्राप्ति का योग है.

वृश्चिक

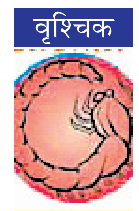

इस सप्ताह अपनी योजनाओं को व्यवसायिक रूप प्रदान करने की कोशिश करेंगे. सामाजिक कार्यो के लिये आप समय एवं धन खर्च करेंगे. किसी अनुभवी के साथ मिलने से कार्य का बोझ कम होगा, अति उत्साह व उतावलीपन में आपसे लापरवाही हो सकती है, सावधान रहें. विरोधी वर्ग अकारण ही परेशानी करने की कोशिश करेंगे.छात्रों की सफ्लता के योग है.

धनु

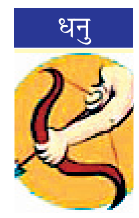

इस सप्ताह कार्य की रूपरेखा बन सकती है. रोजी रोजगार के क्षेत्र में सफ्लता मिलेगी. पुराना रूका हुआ कार्य बनेगा. यदि आप नये आवास की तलाश में है, तो सफ्लता मिलेगी. अपनी वस्तुओं को सम्हालकर रखें. समयका सदुपयोग करें. छात्राओं को सुअवसर मिल सकता है. घरेलू कार्यो में विशेष सफ्लता मिलेगी. धार्मिक कार्यो में खर्च होगा.

मकर

इस सप्ताह आपको उतार चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है. व्यापार के क्षेत्र में सोच विचार कर निर्णय करें, वरना हानि हो सकती है. कार्यक्षेत्र में सहयोगी से सहयोग मिलेगा. सप्ताहान्त में आप अपने अधिकारी का लाभ उठा सकते हैं. जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा. कामकाजी महिला को परेशानी हो सकती है. रोगी की चिन्ता रहेगी.

कुम्भ

इस सप्ताह आपके परिवार के सदस्यों को संतुष्ट करने के लिये आपकी रमणीक स्थल की सैर होगी. पूर्वाधं का सप्ताह प्रसन्नता दायक रहेगा. मान सम्मान मिलेगा. व्यापार के सिलसिले में बेहतर अवसर मिलेंगे. किसी आत्मीयजनों का सहयोग मिलेगा. जीवनसाथी की तलाश नये लोगों को सफ्लता मिलेगी. वित्तीय सहायता प्राप्त हो सकती है.

मीन

चिरपरिचित व्यक्तियों से मेल मुलाकात का योग है, आपसी लोगों का सहयोग रहेगा, शिक्षा के क्षेत्र में सावधानी रखकर कार्य करें, प्रतियोगी परीक्षाओं में विशेष ध्यान दें, स्थिति को देखकर कार्य करें, जमकर जायजाद संबंधी समस्याओं का सरलता से समाधान होगा, सप्ताह के मध्य यात्रा के कारण परेशानी हो सकती है, शारीरिक सुख अच्छा रहेगा.